नारीवाद FEMINISM

simone de beauvoir and Jean Paul Sartre

अध्ययन सामग्री निर्माण

डा शकील हुसैन

shakeelvns27@gmail.com

विभागाध्यक्ष

राजनीति विज्ञान

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महिविद्यालय ।

दुर्ग , छत्तीसगढ़ ।

नैक द्वारा A+ मूल्यांकित

1- अवधारणा

2- प्रमुख विशेषताएं ।

3- नारीवादी चिंतन का विकास

अवधारणा

नारीवाद वह राजनीतिक सामाजिक सिद्धांत है जिसके चिंतन के केंद्र में नारी का अस्तित्व उसकी स्वतंत्रता समानता और न्याय है । यह नारियों की सार्वभौमिक समानता और अधिकारों की रक्षा से संबंधित विचारधारा है । अतः यह मांग करती है की नारियों के साथ लैंगिक आधार पर कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए । महिलाओं के अधिकार और समानता की बात तो ऐसे बहुत पुरानी है और लगभग इतिहास के सभी कालों में ऐसे लोग हुए हैं जिन्होंने महिलाओं की समानता और अधिकारों की रक्षा की बात की है किंतु नारीवाद एक वाद के रूप में एक नवीन और आधुनिक अवधारणा है जो इस बात पर आपत्ति करती है कि महिलाओं के अधिकार पुरुषों की दया और उनकी सदस्यता पर निर्भर है यह वस्तुतः नारी के अधिकारों के दमन की एक की स्थिति है अतः नारीवाद एक विचारधारा के रूप में व्यवस्थित तरीके से एक ऐसी सैद्धांतिक अवधारणा है जो नारी के स्वतंत्रता समानता

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

न्याय और अधिकारों की स्थापना की बात करता है यह अपेक्षा रखती है कि महिलाओं के सामाजिक और राजनीतिक अधिकारों का स्रोत कोई पुत्र सत्तावादी विचार या ग्रंथ नहीं होने चाहिए जिस प्रकार पुरुषों के अधिकार हैं उसी प्रकार महिलाओं के भी अधिकार हैं महिलाओं के अधिकार केवल इसलिए पुरुषों से कम नहीं है कि वह महिलाएं हैं अर्थात लैंगिक असमानता का घन घोर विरोध नारीवाद करता है इस प्रकार कहा जा सकता है कि नारीवाद वाह धारणा है जो न केवल महिलाओं को चित्र के केंद्र में रखती है बल्कि महिला वादी दृष्टिकोण से ही समस्त सामाजिक राजनीतिक मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं की व्याख्या करने की भी अपेक्षा रखती है
अतः नारीवाद महिलाओं के अधिकारों की मांग करने वाला एक वैश्विक आंदोलन है । प्रारंभ में यह आंदोलन के रूप में ही आगे बढ़ा कालांतर में विशेषकर बीसवीं शताब्दी में यह राजनीतिक चिंतन में एक विचारधारा के रूप में भी स्थापित हुआ । इस प्रकार नारीवाद एक राजनीतिक सिद्धांत भी है और एक राजनीतिक आंदोलन भी ।
अतः नारीवाद एक सामाजिक समस्या के रूप में प्रारंभ होता है किंतु बीसवीं शताब्दी में यह एक राजनीतिक अवधारणा बन जाती है क्योंकि अधिकार न्याय समानता इत्यादि राजनीतिक अवधारणाएं हैं महिलाओं को लैंगिक आधार पर इनसे न केवल वंचित रखा गया बल्कि पूर्णतया भेदभाव पूर्ण व्यवहार किया गया ।

विशेषताएं

लैंगिक आधार पर कार्य विभाजन का विरोध

यह इस तर्क और इतिहास की व्याख्या पर आधारित है नारियों को लैंगिक आधार पर कार्य विभाजन में घर की सीमा तक बांधकर गया । घर की सीमा तक सीमित रखने के कारण महिलाओं की प्रतिभा के साथ घनघोर भेदभाव और अन्याय हुआ और उनके व्यक्तित्व को वैसे फलने फूलने का अवसर नहीं मिला जैसे पुरुषों को मिला ।
घर की सीमा की सीमित परिधि में वह उत्पादन के केवल निचले स्तर तक सीमित रह गई और उसकी स्थिति गुलामों से अधिक ऊपर कभी भी नहीं हो पाई । इसलिए इसके मूल में लैंगिक असमानता और भेदभाव है ।
अतः नारीवाद लैंगिक आधार पर कार्य विभाजन का घोर विरोध करता है और यह मांग करता है कि महिलाओं के लिए कार्य का निर्धारण पुरुषों के द्वारा यह समाज के द्वारा नहीं किया जाना चाहिए महिलाओं के सामने भी कार्य की स्वतंत्रता वैसे ही होनी चाहिए जैसे पुरुषों के पास है अतः लैंगिक आधार पर कार्य विभाजन का विरोध नारीवाद की एक प्रमुख विशेषता है और यह लैंगिक आधार पर कार्य की सीमाएं और प्रकाश तय करने को नारीवाद की अवमानना मानता है

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

पितृसत्तावाद का विरोध

लगभग सभी नारीवादी इस बात पर सहमत हैं कि इस भेदभाव का सामाजिक दर्शन पितृसत्तावाद है ।पितृसत्ता बाद के कारण कालांतर में जब राजनीतिक अधिकारों की बात आई तो महिलाओं को उन से वंचित कर दिया गया

और सामाजिक अधिकारों की भांति ही राजनीतिक अधिकारों का भी ताना-बाना इस प्रकार बुना गया कि उससे महिलाओं को दूर रखा जा सके। कुल मिलाकर **एक पुरुष प्रधान सामाजिक राजनीतिक व्यवस्था का निर्माण हुआ** जिसमें महिलाओं की कोई भूमिका नहीं मानी गई। नारीवाद का चिंतन यहीं से प्रारंभ होता है इसलिए नारीवाद मूलतः पितृसत्तावाद की विरोधी विचारधारा है और यह मांग करती है कि सामाजिक राजनीतिक अधिकार न केवल महिलाओं को मिलने चाहिए बल्कि प्रत्येक राजनीतिक अवधारणा की व्याख्या भी नारीवादी दृष्टिकोण से की जानी चाहिए।

नारी को अर्थतंत्र या प्रणाली से बाहर रखने का विरोध

एक पितृसत्तावादी समाज में आर्थिक प्रणाली का विकास इस प्रकार से होता है कि उस में महिलाओं की स्थिति श्रमिकों से अधिक अच्छी नहीं होती तथा उत्पादन के साधनों और उत्पादन पर पूर्ण अधिकार पुरुषों का होता है। उत्पादन से लेकर उनके विपणन और विनिमय तक की प्रणाली इस प्रकार से विकसित की जाती है कि वह पूर्णतः पुरुष प्रधान रहे। इस प्रकार के विचार मार्क्सवादी नारीवादी चिंतकों ने दिए हैं। किंतु अधिकांश नारीवादी चिंतकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि लैंगिक आधार पर कार्य विभाजन के कारण एवं महिलाओं को घर तक सीमित रखने के कारण उत्पादन विपणन और विनिमय की व्यापक गतिविधि से महिलाओं को दूर कर दिया गया। अर्थतंत्र से दूर रहने के कारण उनका चतुर्दिक विकास संभव नहीं हो सका अतः अर्थ तंत्र में नारी की सक्रिय भूमिका और कार्य की स्वतंत्रता नारीवाद की प्रमुख विशेषता है।

विचारधारा से नारी की अनुपस्थिति का विरोध

पितृ सत्तावादी समाज में राजनीतिक सामाजिक अधिकार और सामाजिक मान्यताओं का विकास इस प्रकार हुआ है की प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक राजनीतिक सामाजिक विचार धाराओं में नारी के वजूद को ही स्वीकार नहीं किया गया और उसकी लगभग अनुपस्थिति पाई गई है। अरस्तु जैसे महान वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले दार्शनिक ने भी महिलाओं की स्थिति को स्वीकार नहीं किया। रूसो ने भी महिलाओं को नागरिकता नहीं दी और नीत्शे तो महिला अधिकारों का मजाक उड़ाया करता था। आधुनिक काल में भी ऐसे अनेक चिंतक हुए हैं जो ये यह बिल्कुल मानने को तैयार नहीं थे कि महिला और पुरुष कभी समान हो सकते हैं। सामाजिक और राजनीतिक चिंतन धारा में भी महिला चिंतकों महिला विचारों को स्थान नही दिया गया और राजनीतिक भूमिका राजनीतिक गतिविधि में भी महिलाओं की कोई भूमिका स्वीकार नहीं की गई। इस प्रकार नारीवाद समस्त विचारधाराओं की नारीवादी व्याख्या करने की कोशिश करता है

DR. SHAKEEL HUSAIN

शक्ति की विचारधारा से नारियो के बहिर्गमन का विरोध

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

आदिम काल से लेकर आधुनिक काल तक सत्ता का आधार शक्ति ही रहा है किंतु सत्तावादी समाज में नारियों का चित्रण एक कोमल शक्तिहीन अबला के रूप में किया गया और इसी के अनुरूप उनकी भूमिका स्वीकार की गई। अतः शक्तिहीनता अवधारणा महिलाओं के साथ लैंगिक भेदभाव का एक प्रमुख आधार बनी।

शक्तिहीन मारने के कारण नारी को सत्ता और राजनीतिक सत्ता की विचारधारा के लिए कभी उपयुक्त समझा ही नहीं गया जिसके कारण समस्त राजनीतिक विमर्श से ही महिला हमेशा बाहर रही या उसको बाहर रखा गया । आधुनिक राजनीति विज्ञानियों की मान्यता है की शक्ति की परिधि में जो तत्व होते हैं वही सत्ता में जगह पाते हैं और जो सत्ता में जगह पाते हैं वहीं सामाजिक राजनीतिक मूल्यों का निर्माण करते हैं । अतः महिलाओं को बड़े सुनियोजित तरीके से सत्ता और शक्ति की अवधारणा से बाहर रखा गया जिसके कारण उनकी स्थिति अच्छी नही रही । अतः नारीवाद राजनीतिक सत्ता और विचारधाराओं की भी नारीवादी दृष्टिकोण से व्याख्या करता है । और आर्थिक स्वतंत्रता के साथ-साथ राजनीतिक स्वतंत्रता और राजनीतिक गतिविधियों की स्वतंत्रता भी नारीवाद के लिए आवश्यक मानता है ।

पितृसत्ता मूल्य व्यवस्था का विरोध

नारी वादियों की है मान्यता है कि **पितृसत्तावाद की शक्ति उसकी मूल्य व्यवस्था में है ।** पितृसत्तावाद का वैल्यू सिस्टम ही इस प्रकार बनाया गया है कि उसके केंद्र में पुरुष है धार्मिक मान्यताओं कहानियों विश्वासों कर्मकांड और सामाजिक मान्यताओं संस्कृतियों, संस्कृति के भौतिक भौतिक तत्वों सामाजिक परंपराओं आदि सबका निर्माण इसी प्रकार किया गया कि उसका स्वामी पुरुष है । और महिलाएं केवल उसमें कार्य कर्ता है या अनुचर है । महिलाओं के गुणों की व्याख्या भी वास्तव में महिलाओं की शक्ति हीनता ही दिखाई गई । वह सुंदर है कोमल है शालीन है ममतामई है अबला है इत्यादि इत्यादि। यह सभी देशकाल परिस्थितियों धर्मो और संस्कृतियों की विशेषता रहा है । अतः नारीवादी आंदोलन और चिंतक पितृसत्वाद बाद की मूल्य व्यवस्था पर चोट करते हैं और यह या आग्रह करते हैं कि सत्तावादी संस्थाओं जैसे विवाह परिवार आदि की पुनर्व्याख्या आवश्यक है और पितृसत्तावादी मूल्य व्यवस्था स्थान पर नारी केंद्रित मूल्यों की स्थापना आवश्यक है । आधुनिक नारी वादियों जैसे **हेलेना सीजू रोज मेरी** आदि इतिहाह संस्कृति आदि को पितृसत्तावादी ही मानती हैं और उसका विरोध करती है । **कैट मिलेट और शुलामीठ फायरस्टोन** जैसी उग्र महिला वादी तो विवाह और परिवार के उन्मूलन तक की बात करती हैं । नारीवाद पितृसत्तावादी मूल्य व्यवस्था को महिलाओं के पिछड़ेपन और अधिकार विहीनता के लिए मूल कारण मानता है और उसका विरोध करता है और नवीन मूल्य व्यवस्था के स्थापना किया का प्रयास करता है ।

नारीवाद का विकास

प्रथम चरण :

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

सभ्यता के प्रारंभिक चरण में काल परिस्थितियों में नारियों की स्थिति उतनी खराब नहीं थी जितनी कालांतर में हो गई वैदिक काल में भारत में नालियों ने वेदों में श्रृचाओं की रचना की है गार्गी मैत्रेयी घोषा लोपामुद्रा कपाला आदि महिला ऋषि हैं जिन्होंने वैदिक मंत्रों की रचना की । इसी प्रकार की स्थिति दूसरे धर्म संस्कृतियों में भी

दिखाई देती है किंतु कालांतर में सभ्यता के अधिक विकास के साथ कार्य विभाजन में महिलाओं को घर तक सीमित कर दिया गया और महिलाओं की स्थिति उत्तरोत्तर खराब होती गई ।

राजनीतिक चिंतन यदि हम देखें तो यद्यपि राजनीति विज्ञान के पिता अरस्तु ने महिलाओं के बारे में कोई विशेष चर्चा नहीं की किंतु उनके गुरु महान दार्शनिक प्लेटो ने महिला और पुरुषों में कोई भेद नहीं किया । प्लेटो ने तो राज्य की शिक्षा व्यवस्था में महिलाओं को अनिवार्य रूप से शामिल किया और महिलाओं को राजा बनने तक की अनुमति प्रदान की । प्लेटो यह वह प्रथम दार्शनिक है जो यह मानता है की महिला और पुरुष के प्रतिभा और मेधा में कोई अंतर नहीं होता इसलिए वह आवाहन करता है कि राज्य की समस्त क्षमता का राज्य के लिए उपयोग होना चाहिए । प्लेटो के आदर्श राज्य में दार्शनिक राजा केवल पुरुष नहीं बल्कि महिलाएं भी हैं किंतु इसाईयत के आगमन के बाद मध्यकाल में महिलाओं की ही नहीं बल्कि सर्वसाधारण पुरुषों की भी स्थिति शोचनीय ही थी अतः मध्यकाल को अंधकार युग माना गया ।

पुनर्जागरण के बाद राजनीतिक चिंतन में महिला अधिकारों की मांग प्रारंभ हुई लेकिन यह बहुत विलंब से हुआ । आधुनिक काल में महिलाओं के अधिकार की पहली व्यवस्थित मांग जॉन स्टूअर्ट मिल के द्वारा की गई जिससे महिला मताधिकार की मांग की । कई अन्य विचारक भी हुए जिनमें सबसे महत्वपूर्ण नाम है **मैंरी विल्स स्टोनक्राफ्ट** का ।

नारीवाद के विकास के प्रथम चरण की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है की नारीवाद इस समय नारियों के राजनीतिक अधिकारों की मांग कर रहा था जिसमें मतदान करने, निर्वाचित होने और विरोध करने आदि के अधिकार शामिल थे । स्टोन क्राफ्ट महिला मताधिकार की बहुत जोर शोर से उठाई ।

द्वितीय चरण आधुनिक युग : 1950 तक

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशक में ब्रिटेन सहित समझ के रूप में महिला मताधिकार की मांग बहुत मजबूत हो गई थी और महिला मताधिकार पढ़े लिखे समाज और बौद्धिक वर्ग की एक प्रमुख मांग हो गई थी इसलिए हम देखते हैं कि 1920 से द्वितीय महायुद्ध तक आते-आते ब्रिटेन फ्रांस जर्मनी स्पेन सहित यूरोप के अधिकांश देशों में इसी समय महिलाओं को मताधिकार प्रदान किया गया द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति तक आते-आते महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों की प्रक्रिया लगभग पूरी हो जाती है और नारीवादी आंदोलन वैशाली डिस्ट्रिक्ट भी बहुत मजबूत हो जाता है मोबाइल चार्जिंग दृष्टि से भी बहुत मजबूत हो जाता है तथा राजनीति में महिलाओं की सहभागिता और उनकी राजनीतिक अधिकारों की व्याख्या और स्थापना काफी सीमा तक द्वितीय महायुद्ध के समाप्ति तक अपनी परिपक्व स्थिति में आ जाती है ।

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

तृतीय चरण : 1950 के अनन्तर

बीसवीं शताब्दी के चौथे पांचवें दशक तक राजनीतिक चिंतन में आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता का दौरा आ गया था इसमें अनेक राजनीतिक विचारधाराएं जैसे अस्तित्ववाद अलगाववाद और नवमार्क्सवाद आदि स्थापित

हो रहे थे। इन चिंतकों में बहुत बड़ी तादाद ऐसे लोगों की थी जो लैंगिक असमानता और भेद के खिलाफ थे जिनमें महत्वपूर्ण नाम अस्तित्ववादी **ज्यां पाल सार्त्र** का है। इस समय तक राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति हो जाने के कारण नारीवादी आंदोलन महिलाओं की सामाजिक स्थिति और सामाजिक अधिकारों की स्थापना की ओर अग्रसर हुआ। इस समय नारीवादी विचारकों ने समाज में महिलाओं की हैसियत उनके निर्णय लेने के अधिकार आत्म निर्णय की स्वतंत्रता और पारिवारिक संरचना में महिलाओं की न केवल मुक्ति बल्कि पुरुषों की भी बराबर भागीदारी की बातें की। जिनमे सबसे महत्वपूर्ण नाम सार्त्र की मित्र **सीमान द ब्वायर** का है। इसके अलावा **एन्द्रे लार्डे, बेलहुक्स, पैट्रिका कोलिन्स, एने स्टर्लिंग, एन्द्रे द्वोर्किन एवं कैथरीन मैकेन , बेट्टी फ्रीडेन** आदि के नाम भी बहुत महत्वपूर्ण है इस समय अनेई बहुत ही महत्वपूर्ण रचनाएं सामने आई जिसमें सीमान द ब्वायर का ग्रंथ द सेकंड सेक्स, **शुलमिथ फर्स्टोन की रचना** द डायलेक्टिक्स ऑफ सेक्स, कैट मिनट की रचना द सेक्सुअल पॉलिटिक्स, मेरी डैले की रचना द चर्च एंड द सेकेण्ड सेक्स , बेटी फ्रीडम की पुस्तक द फेमिनिस्ट मिस्टिकआदि अति महत्वपूर्ण साहित्य थे जिनमे नारी की पुरुषवादी उपयोगिता अर्थात काम भावना केंद्रित पितृसत्तावाद पर प्रहार किए गए।

यही स्थिति समकालीन नारीवाद नारीवादी आंदोलनों की भी है जिसमें नारीवाद आज राजनीतिक सामाजिक समानता और मांगों से आगे जा चुका है। और उत्तर आधुनिकता और उत्तर औद्योगिक समाज में पुरुषों के बराबर भागीदारी का आवाहन नारीवाद करता है।

निष्कर्ष

नारीवाद अब केवल एक आंदोलन, एक राजनीतिक विचारधारा नहीं रह गई है बल्कि यह मार्क्सवाद की भांति राजनीतिक विश्लेषण का एक दृष्टिकोण बन गया है अब कोई भी राजनीतिक सामाजिक विचारधारा या अवधारणा का मूल्यांकन या विश्लेषण किया जाता है तो उसमें नारीवादी दृष्टिकोण से व्याख्या अनिवार्य हो जाती है अतः समकालीन राजनीतिक चिंतन में नारीवाद एक आंदोलन भी है एक विचारधारा भी है एक सिद्धांत भी है और सबसे ऊपर एक विश्लेषण की पद्धति बन गया है।

गृह कार्य

1- नारीवाद की अवधारणा स्पष्ट कीजिए 100 शब्दो मे ।

2- नारीवाद के विकास पर टिप्पणी लिखिए 300शब्दो मे।

3- बीसवीं सदी की कुछ प्रमुख नारीवादियो और उनकी रचनाओ का परिचय दीजिए। 150 शब्दो मे।

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

संदर्भ

आनलाइन रिसोर्स

https://www.britannica.com/topic/feminism

https://www.britannica.com/biography/Mary-MacLane

https://en.m.wikipedia.org/wiki/Simone_de_Beauvoir

Feed Back link
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSdRpNmu6PZ-AMoLrMvODCDwa6-tG3nPDU_Lk-VyjnKKhmfErw/viewform

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE